कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 68–71

सूरजमुखी की जायद खेती

डॉ. हरिकेश[1] एवं डॉ. विमलेश कुमार[2]

[1]सहा. प्राध्यापक (प्रवक्ता) कृषि संकाय,
आशा भगवान बक्श सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
पूरा बाजार, अयोध्या, उ.प्र.

[2]सहा. प्राध्यापक, उद्यान विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या, (उत्तर प्रदेश), भारत।

Email Id: harikeshkumarup@gmail.com

भारत में इसे कई राज्यों में उगाया जा रहा है,इसके पौधों को पूर्ण रूप से तैयार होने के लिए तीन से चार महीने का समय लगता है। इसकी फसल वर्ष में खरीफ, जायद और रबी तीनो ही मौसम में की जा सकती है। परन्तु खरीफ में सूरजमुखी पर अनेक रोग कीटों का प्रकोप होता है। फूल छोटे होते है। तथा उनमें दाना भी कम पड़ता है। जायद में सूरजमुखी की अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

भूमि एंव जलवायु

सूरजमुखी की खेती खरीफ रबी जायद तीनो मौसम में की जा सकती हैप् फसल पकते समय शुष्क जलवायु की अति आवश्यकता पड़ती है। सूरजमुखी की खेती अम्लीय एवम क्षारीय भूमि को छोड़कर सिंचित दशा वाली सभी प्रकार की भूमि (पीएच मान 5 से 7 के मध्य) में की जा सकती है, लेकिन दोमट भूमि सर्वोतम मानी जाती है।

इसके बीजों की रोपाई के समय 15 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है, क्योकि अधिक तापमान में इसके बीजों का अच्छे से अंकुरण नहीं हो पाता है। पौधों की वृद्धि के दौरान सामान्य तापमान तथा फूलो को पकने के लिए शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी

खेत में पर्याप्त नमी न होने की दशा में पलेवा लंगाकर जुताई करनी चाहियें। आलू, राई, सरसों अथवा गन्ना आदि के बाद खेत खाली होते ही एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा देशी हल से 2–3 बार जोतकर मिट्टी भुरभुरी कर लेना चाहिए, जिससे की नमी सुरक्षित बनी रह सके। रोटावेटर से खेत की तैयारी शीघ्र हो जाती है।

प्रजातियाँ

सूरजमुखी की बाजार में कई उन्नत किस्में मौजूद है, जो मुख्य रूप से दो भागो में विभाजित है। जिसमे पहली संकुल और दूसरी संकर प्रजाति मौजूद है। जिनकी जानकारी इस प्रकार हैः–

संकुल प्रजाति

क्र.सं.	प्रजाति	पकने की अवधि (दिन में)	पौधों की ऊचाई (से.मी.)	मुंडक का व्यास (से.मी.)	अधिकतम उपज क्षमता (कु./हे.)	औसत उपज (कु./हे.)	तेल प्रतिशत
(अ)	संकुल						
1	मार्डन	75-80	80-100	12-15	18.00	10-12	34-38
2	सूर्या	80-85	75-110	12-15	15.00	12-15	35-37
(ब)	संकर						
3	के.वी. एस.एच-1	90-95	150-180	15-20	30.00	18-20	43-45
4	एस.एच.-3322	90-95	135-175	15-20	28.00	22-25	40-42
5	एम०एस०एफ०एच०17	90-95	140-150	15-20	28.00	18-20	35-40
6	वी०एस०एफ०-1	90-95	140-150	15-20	28.00	18-20	35-40

बुवाई का समय तथा विधि

जायद में सूरजमुखी की बुवाई का उपयुक्त समय फरवरी का दूसरा पखवारा है जिससे फसल मई के अन्त या जून के प्रथम सप्ताह तक पक जायें। बुवाई में देर करने से वर्ष शुरू हो जाने के बाद फूलों को नुकसान पहुंचता है। बुवाई कतारों मे हल के पीछे 4–5 से0मी0 की गहराई पर करनी चाहियें। लाइन से लाइन की दूरी 45 से0मी0 होनी चाहियें। और बुवाई के 15–20 दिन बाद सिंचाई से पूर्व थिनिंग (विरलीकरण) द्वारा पौधे से पौधे की आपसी दूरी 15 से0मी0 कर देनी चाहियें। 10 मार्च तक बुवाई अवश्य पूरी करा लें।

बीज दर

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए 12 से 15 किग्रा० स्वस्थ संकुल प्रजाति का प्रमाणित बीज पर्याप्त होता है, जब कि संकर प्रजाति का 5–6 किग्रा. बीज प्रति हे. उपयुक्त रहता है। यदि बीज का जमाव 70 प्रतिशत से कम हो तो तद्नुसार बीज की मात्रा बढ़ा देना चाहिये।

बीज शोधन

बीज को 12 घण्टे पानी में भिगोकर साये में 3–4 घण्टे सुखाकर बोने से जमाव शीघ्री होता है। बोने से पहले प्रति किलोग्राम बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा या थीरम की

2.5 ग्राम मात्रा में से किसी एक रसायन से शोधित कर लेना चाहिए।

उर्वरक

सामान्यतः उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए। मिट्टी परीक्षण न होने की दशा में संकुल में 80 किग्रा० संकर में 100 किग्रा० नत्रजन, 60 किग्रा० फास्फोरस एवं 40 किग्रा० पोटाश प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है। नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कूंडों में प्रयोग करना चाहिये। नत्रजन की शेष मात्रा बुवाई एंव पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय कूडो में प्रयोग करना चाहियें। नत्रजन की शेष मात्रा बुवाई के 25–30 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में देनी चाहियें। सूरजमुखी की खेती में 200 किग्रा. जिप्सम प्रति हेक्टर का प्रयोग बुवाई के समय अवश्य करना चाहियें। इसकी खेती में 3 से 4 टन गोबर की कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टर का प्रयोग लाभप्रद पाया गया है।

सिंचाई

सूरजमुखी के पौधों को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसलिए इसकी पहली सिंचाई को बीजों की रोपाई के तुरंत बाद करना होता है। इसके बीजों को अंकुरण के लिए नमी की आवश्यकता होती है, जिसके लिए इसके खेत में हल्की–हल्की सिंचाई करना जरूरी होता है। बीज अंकुरण के बाद इसके पौधों को केवल 4 से 5 सिंचाई की आवश्यकता होती है। किन्तु जब इसके पौधों पर फूल में दाने बनने लगे उस दौरान खेत में नमी बनाये रखने से लिए जरूरत के हिसाब पानी लगा दे।

खरपतवार नियंत्रण

सूरजमुखी के पौधों में खरपतवार नियंत्रण के लिए प्राकृतिक और रासायनिक दोनों ही तरीको का इस्तेमाल किया जाता है। प्राकृतिक तरीके से खरपतवार नियंत्रण के लिए पौधों की निराई–गुड़ाई की जाती है। इसकी पहली गुड़ाई को बीज रोपाई के 20 से 25 दिन बाद करना होता है। इसके अलावा सूरजमुखी के पौधों को 15 से 20 दिन के अंतराल में दो से तीन और गुड़ाई की जरूरत होती है। रासायनिक विधि द्वारा खरपतवार पर नियंत्रण पाने के लिए पेन्डिमेथालिन 30 ई.सी. की उचित मात्रा का छिड़काव खेत में बीज रोपाई के दो दिन बाद करना होता है।

मिट्टी चढ़ाना

सूरजमुखी का फूल काफी बड़ा होता है जिससे पौधों के गिरने का भय रहता है। अतः नत्रजन की टाप ड्रेसिंग के बाद एक बाद एक बार पौधों पर 10–15 सेमी0 मिट्टी चढ़ा देना अच्छा होता है।

परसेचन क्रिया

सूरजमुखी का परसेचित फसल है। इसमें अच्छे बीज पड़ने हेतु परसेचन क्रिया नितान्त आवश्यक है। यह क्रिया भौरों एवं मधुदृ मक्खियों के माध्यम से होती है। जहां इनकी कमी हो हाथ द्वारा परसेंचन की क्रिया अधिक प्रभावकारी है। अच्छी तरह फूल आ जाने पर हाथ में दस्ताने पहनकर या किसी मुलायम रोंयेदार कपड़े को लेकर सूरजमुखी के मुंडकों पर चारों ओर धीरे से घुमा दें। पहले फूल के किनारे वाले भाग पर, फिर बीच के भाग पर

यह क्रिया प्रातःकाल 7:30 बजे तक करनी चाहिए।

फसल सुरक्षा

दीमक

इस कीट के श्रमिक फसल को भारी क्षति पहॅचाते है।

नियंत्रण : बुवाई से पूर्व

- पूर्व फसल के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहियें।
- अच्छी / सड़ी गोबर / कम्पोस्ट खाद का ही प्रयोग करना चाहिए।

दीमक के नियंत्रण हेतु 2.5 किग्रा० ब्यूवेरिया बैसियाना को लगभग 75 किग्रा० गोबर की खाद में मिलाकर एक सप्ताह छाया में फैलाने के बाद प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।

खडी फसल में प्रकोप दिखाई देने पर

सिंचाई के पानी के साथ क्लोरपाइरीफास 20 ई०सी० 2.5–3.5 लीटर प्रति हे० की दर से प्रयोग करना चाहिए।

हरे फुदके

इस कीट के प्रौढ़ तथा बच्चे पत्तियों से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। इससे पत्तियों पर धब्बे पड़ जाते हैं। इसके नियन्त्रण हेतु एजाडिरोक्टिन 0.15% ई०सी० 2.50 लीटर या मिथाइल ओडिमेटान 25: ई०सी० 1 लीटर या डाइमेथोएट 30% ई०सी० की 1.00 लीटर मात्रा का 600–800 लीटर पानी के साथ प्रति. हे. या इमिडाक्लोपिड 250 ग्राम छिड़काव करें। यह छिड़काव अपरान्ह देर से करना चाहिए ताकि परसेंचन क्रिया प्रभावित न हो।

डस्की बग

सुरमई रंग की यह छोटी छोटी बग पत्तियों डंठल एंव मुडक की निचली सतह से रस चूसकर हानि पहुचाते है। अधिक संख्या हो जाने पर पौधें कमजोर हो जाते है। और पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। अधिक हरे फुदको के लिए संस्तुत उपचार इसके लिए भी प्रभावी है।

कटाई–मड़ाई

जब सूरजमुखी के बीज पक कर कडे हो जाये तो मुडको की कटाई कर लेना चाहिये। पके हुए मुडको का पिछला भाग पीला रंग का हो जाता है। मुडको को काटकर सायें मे सुखा लेना चाहियें। और इन्हे ढेर बनाकर नही रखना चाहियें इसके बाद मडाई डण्डे से पीटकर की जाती है। मडाई हेतु सूरजमुखी थ्रेसर का प्रयोग किया जाना उपयुक्त होगां।

उपज एवं भण्डारण

सूरजमुखी के पौधों को पूर्ण रूप से तैयार होने में 90 दिन का समय लग जाता है। इसके बाद इसके फूलो की तुड़ाई कर ली जाती है। फूलो की तुड़ाई के बाद उन्हें एकत्रित कर छायादार जगह पर सुखा लिया जाता है। सुखाने के बाद मशीन द्वारा इसके फूलो से बीजों को निकाल लिया जाता है। इसके एक एकड़ के खेत से तकरीबन 20 से 25 क्विंटल की पैदावार प्राप्त हो जाती है। सूरजमुखी का बाजारी भाव 4,000 रूपए प्रति क्विंटल होता है, जिससे किसान भाई इसकी एक बार की फसल से कम समय में एक लाख तक की कमाई आसानी से कर सकते है।